भारत की खोज

0847

जवाहरलाल नेहरू

की पुस्तक *भारत की खोज* का संक्षिप्त रूप

कक्षा 8 के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
अप्रैल 2008 चैत्र 1928

पुनर्मुद्रण
दिसंबर 2008 मार्गशीर्ष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
नवंबर 2010 अग्रहायण 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
जनवरी 2014 अग्रहायण 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939
जनवरी 2019 पौष 1940
अगस्त 2019 श्रावण 1941

PD 460T RPS

© *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008*

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सन् 1996 में *भारत की खोज* का संक्षिप्त संस्करण अपनी **अतिरिक्त पठन योजना** के अंतर्गत प्रकाशित किया था। अब यह अपेक्षित संपादन के पश्चात निर्धारित पाठ्यक्रम में पूरक पुस्तक के रूप में समाहित की गई है।

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा अंकुर ऑफ़सेट प्रा. लि., ए-54, सैक्टर-63, नोएडा-201 301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-832-4

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *बिबाष कुमार दास*
संपादक : *मीरा कांत*
सहायक उत्पादन अधिकारी : *दीपक जैसवाल*

सज्जा एवं आवरण
जोएल गिल

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन कर सकेंगे। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी

© NCERT not to be republished

प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच–विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए परिषद् उनके प्राचार्यों एवं उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ है जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। परिषद् माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
30 नवंबर 2007

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

अनुवाद, संक्षेपण और संपादन

निर्मला जैन, *पूर्व अध्यक्ष,* हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *हिंदी शिक्षक,* निगम प्राथमिक विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली

प्रेमपाल शर्मा, 96 कला विहार अपार्टमेंट्स, मयूर विहार, नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

नरेश कोहली, *प्रवक्ता,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

परिषद् जवाहरलाल नेहरू स्मारक निधि के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिसने इस पुस्तक को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए हम कंप्यूटर स्टेशन (भाषा शिक्षा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* कमलेश आर्य, अरविंद शर्मा एवं विजय कुमार, *कॉपी एडीटर* पूजा नेगी एवं मनोज मोहन और *प्रूफ़ रीडर* दुर्गा देवी एवं कंचन शर्मा का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

अनुवाद, संक्षेपण और संपादन

जवाहरलाल नेहरू ने तीन कालजयी कृतियों की रचना की – *विश्व-इतिहास की झलकियाँ*, *आत्मकथा* और *भारत की खोज*। इनमें से पहली कृति की रचना यद्यपि इंदिरा गांधी (तब इंदिरा गांधी नेहरू) के लिए की गई थी परंतु उससे भारत ही नहीं विश्व के युवा मानस को मानव का इतिहास समझने की दृष्टि मिली। उसी तरह जैसे उनकी *आत्मकथा* व्यक्ति-विशेष की जीवन-कथा मात्र नहीं है, बल्कि उससे नए भारत की मानसिक बनावट को समझने की अंतर्दृष्टि मिलती है।

भारत की खोज की प्रस्तावना में इंदिरा गांधी ने कहा है कि – "इस रचना में भारत के राष्ट्रीय-चरित्र के स्रोतों की गहरी पड़ताल की गई है।"

भारत की खोज की रचना 1944 में अप्रैल-सितंबर के बीच अहमदनगर के किले की जेल में हुई। यह पुस्तक 9 अगस्त 1942 से 28 मार्च 1945 के बीच के अपने साथियों और सहबंदियों को समर्पित की गई है। तिथियों का यह चुनाव संयोग भर नहीं है बल्कि उस दौर की घटनाओं के प्रति नेहरू के गहरे सरोकार की ओर इशारा करता है।

पुस्तक की भूमिका में नेहरू ने कारावास के अपने इन साथियों को बहुत सम्मान से स्मरण किया है। कारावास के जीवन की कठिनाइयों और कष्टों के बावजूद उन्होंने असामान्य रूप से योग्य और सुसंस्कृत इन व्यक्तियों के साहचर्य को अपना सौभाग्य माना। इस संदर्भ में नेहरू ने अहमदनगर के कारावास में अपने ग्यारह साथियों की चर्चा की है। इन लोगों का साथ उन्हें इस मायने में बहुत दिलचस्प लगता था कि वे केवल राजनीतिक माहौल के ही नहीं, भारतीय विद्वत्ता के, प्राचीन और नवीन भारत के तथा तत्कालीन भारतीय जीवन के सभी पक्षों के प्रतिनिधि थे। उनका संबंध भारत की लगभग सभी जीवित और प्राचीन भाषाओं से था और उनकी विद्वत्ता का स्तर बहुत ऊँचा था। प्राचीन भाषाओं में संस्कृत और पाली के साथ अरबी एवं फ़ारसी और आधुनिक भाषाओं में हिंदी, उर्दू, बंगाली, गुजराती, मराठी, तेलुगु, सिंधी एवं उड़िया शामिल थीं।

नेहरू ने लिखा है – "मेरे सामने ग्रहण करने के लिए यह तमाम दौलत थी और एकमात्र बाधा उससे लाभान्वित होने की मेरी सीमित क्षमता थी।"

© NCERT not to be republished

अपने साथियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए नेहरू ने मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के प्रभावी व्यक्तित्व और गोविंद बल्लभ पंत, नरेंद्र देव और आसफ़ अली का विशेष रूप से उल्लेख किया है।

इतिहास और संस्कृति के विभिन्न पक्षों के बारे में इन बंदी साथियों से जो अनगिनत बहसें और बातचीत हुईं उससे नेहरू को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने में मदद मिली। इस ऋण को भी उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया है।

मूल रचना के बारे में यह खुलासा इसलिए ज़रूरी था ताकि रचनाकार के केंद्रीय सरोकार और दृष्टिकोण के साथ संपादन-नीति को समझने में आसानी हो। इस रचना में भारत के इतिहास को घटना-क्रम में नहीं, सांस्कृतिक यात्रा के रूप में देखने-समझने का प्रयास है। अतीत का यह 'भार' रचनाकार की विरासत है। व्यक्ति की नहीं पूरी मानव जाति की, जिसे उसने हज़ारों हज़ार वर्षों की काल-यात्रा में जिया, झेला और धारण किया है। इस कहानी का स्रोत नेहरू के मन की वह भीतरी चित्र-गैलरी है जिसका निर्माण अनगिनत वैयक्तिक संपर्कों से हुआ है। इसीलिए वैयक्तिक तत्व और प्रसंग इसमें अनुपस्थित तो नहीं हो सके, पर वे रचनाकार के मूल मंतव्य का अनिवार्य हिस्सा भी नहीं हैं।

मूल का संपादन करने की प्रक्रिया में हमारा केंद्रीय सरोकार यही रहा है कि रचना का यह अनिवार्य कथ्य सुरक्षित रहे। चयन करते हुए दो तरह के प्रसंगों का समावेश नहीं किया गया – (1) नितांत पारिवारिक घटनाएँ और (2) दीर्घ ऐतिहासिक ब्यौरे।

संपादन करते हुए सर्वोपरि महत्त्व *भारत की खोज* के इस संक्षिप्त अनूदित संस्करण के संभावित पाठक वर्ग के स्तर और अपेक्षा को दिया गया है।

यह अनुवाद पठनीय, बोधगम्य और ज्ञानवर्धक हो, पढ़ने के क्रम में संपादन के बावजूद निरंतरता और प्रवाह बना रहे, इसके सुधी पाठक इसकी मूल संवेदना को अखंड रूप में ग्रहण कर सकें, यही हमारा प्रयास रहा है। आशा है पाठक इसे ऐसा ही पाएँगे।

निर्मला जैन

© NCERT not to be republished

विषय-सूची

आमुख iii

अनुवाद, संक्षेपण और संपादन vii

1. अहमदनगर का किला **1–3**
- अतीत का भार
- अतीत का दबाव

2. तलाश **4–16**
- भारत के अतीत की झाँकी
- भारत की शक्ति और सीमा
- भारत की तलाश
- भारत माता
- भारत की विविधता और एकता
- जन संस्कृति

3. सिंधु घाटी सभ्यता **17–45**
- आर्यों का आना
- प्राचीनतम अभिलेख, धर्म-ग्रंथ और पुराण
- वेद
- भारतीय संस्कृति की निरंतरता
- उपनिषद्
- व्यक्तिवादी दर्शन के लाभ और हानियाँ
- भौतिकवाद
- महाकाव्य, इतिहास, परंपरा और मिथक
- *महाभारत*
- *भगवद्गीता*
- प्राचीन भारत में जीवन और कर्म

© NCERT not to be republished

- महावीर और बुद्ध – वर्ण व्यवस्था
- बुद्ध की शिक्षा
- बुद्ध–कथा
- चंद्रगुप्त और चाणक्य – मौर्य साम्राज्य की स्थापना
- अशोक

4. युगों का दौर 46–71
- गुप्त शासन में राष्ट्रीयता और साम्राज्यवाद
- दक्षिण भारत
- शांतिपूर्ण विकास और युद्ध के तरीके
- प्रगति बनाम सुरक्षा
- भारत का प्राचीन रंगमंच
- संस्कृत भाषा की जीवंतता और स्थायित्व
- दक्षिण–पूर्व एशिया में भारतीय उपनिवेश और संस्कृति
- विदेशों पर भारतीय कला का प्रभाव
- भारत का विदेशी व्यापार
- प्राचीन भारत में गणितशास्त्र
- विकास और ह्रास

5. नयी समस्याएँ 72–91
- अरब और मंगोल
- महमूद गज़नवी और अफ़गान
- समन्वय और मिली–जुली संस्कृति का विकास
  कबीर, गुरु नानक और अमीर खुसरो
- बाबर और अकबर – भारतीयकरण की प्रक्रिया
- यांत्रिक उन्नति और रचनात्मक शक्ति में एशिया
  और यूरोप के बीच अंतर
- औरंगज़ेब ने उल्टी गंगा बहाई –
  हिंदू राष्ट्रवाद का उभार – शिवाजी

© NCERT not to be republished

- प्रभुत्व के लिए मराठों और अंग्रेज़ों के बीच संघर्ष
  अंग्रेज़ों की विजय
- रणजीत सिंह और जय सिंह
- भारत की आर्थिक पृष्ठभूमि – इंग्लैंड के दो रूप

6. अंतिम दौर – एक 92–105
- भारत राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से पहली बार
  एक अन्य देश का पुछल्ला बनता है
- भारत में ब्रिटिश शासन के अंतर्विरोध
  राममोहन राय – बंगाल में अंग्रेज़ी शिक्षा और समाचार पत्र
- सन् 1857 की महान क्रांति – जातीयतावाद
- हिंदुओं और मुसलमानों में सुधारवादी और दूसरे आंदोलन
- तिलक और गोखले

7. अंतिम दौर – दो 106–114
- राष्ट्रीयता बनाम साम्राज्यवाद – मध्य वर्ग की
  बेबसी – गांधी का आगमन
- गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस सक्रिय
- अल्पसंख्यकों की समस्या – मुस्लिम लीग –
  मोहम्मद अली जिन्ना

8. तनाव 115–116
- चुनौती – 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव

9. दो पृष्ठभूमियाँ – भारतीय और अंग्रेज़ी 117–120
- व्यापक उथल-पुथल और उसका दमन
- भारत की बीमारी – अकाल
- भारत की सजीव सामर्थ्य

उपसंहार 121–122

शब्दार्थ एवं टिप्पणी 123–125

प्रश्न-अभ्यास 126–130

© NCERT not to be republished

जवाहरलाल नेहरू

(1889–1964)

सच्चे अर्थों में नेहरू जी आधुनिक भारत के निर्माता हैं। महात्मा गांधी की अगुआई में उन्होंने आज़ादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लिया। सन् 1947 में अंग्रेज़ों की गुलामी से देश आज़ाद हुआ और वे 1947 से 1964 तक प्रधानमंत्री रहे। भारत के अलावा उन्हें दुनियाभर में एक ऐसे धर्मनिरपेक्ष, मानववादी राजनीतिज्ञ के रूप में जाना जाता है जिन्होंने विश्वशांति और समाजवादी आदर्शों के लिए जीवन-भर आवाज़ बुलंद की।

एक महान राजनेता के साथ-साथ उनकी प्रसिद्धि एक लेखक के रूप में भी सर्वविदित है। उनकी पुस्तकों–*विश्व इतिहास की झलकियाँ, आत्मकथा* और *भारत की खोज* को क्लासिक का दर्जा हासिल है।

भारत की खोज उनकी अंग्रेज़ी में लिखी पुस्तक *डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया* का हिंदी अनुवाद है। इसे उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में 1944 में अहमदनगर के किले में अपने पाँच महीने के कारावास के दिनों में लिखा था। पुस्तक रूप में यह प्रकाशित हुई 1946 में। इस पुस्तक में नेहरू जी ने सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर भारत की आज़ादी तक विकसित हुई भारत की बहुविध समृद्ध संस्कृति, धर्म और जटिल अतीत को वैज्ञानिक दृष्टि से विलक्षण भाषा शैली में बयान किया है। अलबर्ट आइंस्टाइन के शब्दों में–"इस पुस्तक से एक महान देश के गौरवशाली अतीत और आध्यात्मिक परंपराओं की समझ हासिल होती है।"

छह-सात दशक पहले लिखी गई यह पुस्तक आज भी उन सभी के लिए प्रासंगिक है जो इस महादेश के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास को एक ऐतिहासिक क्रमबद्धता में जानना, समझना चाहते हैं।

© NCERT not to be republished